तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

राजभाषा हिंदी पत्रिका –"सजल"
वित्तीय वर्ष 2023-24, अंक-2

वित्तीय वर्ष-2023-24 (अंक-2)
प्रकाशक
मुख्यालय
तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व)
कोलकाता

संपादन-मण्डल

उप महानिरीक्षक डी जॉन मनोज
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. व प्र.)

श्री संजीत कुमार
वरिष्ठ असैन्य कार्मिक अधिकारी
क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी

श्री देवेन्द्र सिंह
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारतीय तटरक्षक

सुरक्षित जीवन... सुरक्षित तट... सुरक्षित सागर

महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, त.प.
कमांडर, तटरक्षक (उ.पू.)

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'सजल' के अंक-2 का प्रकाशन करने जा रहा है| तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व) का क्षेत्रीय कमांडर होने के कारण मुझे गर्व है कि मेरी सभी अधीनस्थ इकाइयाँ राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति कर रही है|

विविधता भारतीयता का मूल मंत्र है जिसमें विविध धर्मों, जातियों, उनकी भाषाओं एवं संस्कृतियों का समावेश है| राजभाषा के रूप में हिंदी इनके मध्य संपर्क सूत्र होने के साथ-साथ इन विविधताओं में एकता की कड़ी का काम करती है| राजभाषा हिंदी का प्रचार जितना अधिक होगा एवं जितना अधिक वह हमारे व्यवहार में आएगी, जनमानस की भागीदारी बढ़ने के कारण हमारे राष्ट्र का विकास उतना ही अधिक होगा| अत: संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि कार्यालयीन कार्य में इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें तथा इसका प्रचार-प्रसार करके देश की प्रगति में अमूल्य योगदान दें|

इस पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत सराहनीय कार्य है| यह पत्रिका इस संगठन में कार्यरत अधिकारियों एवं कार्मिकों को अपनी साहित्यिक अभिरुचि तथा प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक सशक्त अवसर उपलब्ध कराती है| पत्रिका का प्रकाशन निश्चित रूप से राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ –साथ इसके कार्यान्वयन को भी बल प्रदान करता है|

सजल' के अंक-2 हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं पत्रिका के प्रकाशन कार्य से परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई|

(इकबाल सिंह चौहान)
महानिरीक्षक
कमांडर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

उप महानिरीक्षक हिमांशु नौटियाल, त.प.
स्टाफ प्रमुख

संदेश

मेरे लिए यह बहुत ही गर्व और उत्साह का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा 'सजल' के अंक-2 का प्रकाशन किया जा रहा है| किसी भी कार्यालय में राजभाषा 'हिंदी' के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने तथा अधिकारियों तथा कार्मिकों में राजभाषा के प्रति अभिरूचि को बनाए रखने का एक यह एक महत्वपूर्ण साधन है|

यह ध्यातव्य है कि स्वाधीनता के बाद देश की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को सर्वसम्मति से संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए राजभाषा हिंदी के संदर्भ में प्रावधान किया जिसका संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 120, 210 एवं 343 से 351 तक में उल्लेख मिलता है। अत: संवैधानिक तौर पर हिंदी केवल भारतवर्ष की राजकाज की ही भाषा नहीं है अपितु यह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का भी प्रतीक है और यह हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आंदोलनों तथा अभिव्यक्ति की भी भाषा है।

मुझे विश्वास है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा राजभाषा पत्रिका 'सजल' के अंक-2 का प्रकाशन हमारे अधिकारियों तथा कार्मिकों को राजभाषा के प्रति उनके उत्तरदायित्व का ज्ञान कराएगी| राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से 'सजल' के अंक-2 को जारी करने के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

हिमांशु नौटियाल

(हिमांशु नौटियाल)
उप महानिरीक्षक
स्टाफ प्रमुख
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

उप महानिरीक्षक डी जॉन मनोज
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का. एवं प्र.)

संदेश

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उत्तर-पूर्व), कोलकाता की राजभाषा पत्रिका 'सजल' अंक 2 के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुपालन में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है।

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है| विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध के स्तर तक हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है| विदेशों से हिंदी में दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है|

इस मुख्यालय के द्वारा राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास है जो समय अंतराल के साथ इस संगठन तथा इस संगठन से जुड़े सभी लोगों को लाभ प्रदान करेगा| मैं 'सजल' के अंक 2 के प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों तथा कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ|

जॉन मनोज

(डी जॉन मनोज)
उप महानिरीक्षक
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का.एवं प्र.)
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	कंठस्थ 2.0 (स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर)	1-2
2.	हिंदी शब्द सिंधु	3
3.	भारतीय तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा ऑलिव रिडले समुद्री कछुए का संरक्षण	4-5
4.	अध्ययन में अनुवाद का महत्व	6-7
5.	बधाई हो, लड़का हुआ है	8-9
6.	सफर जिंदगी का सुहाना	10
7.	जीवन	11
8.	क्या करें और क्या न करें	12
9.	माँ से ही हम हैं	13
10.	कविता लिखने मैं चला	14
11.	शांति की खोज	15
12.	हिन्द की हिन्दी	16
13.	रेत में आकृति	17
14.	मजबूरी	18
15.	भारत की साइबर सुरक्षा पर पुनर्विचार	19-21
16.	भारत का पुरातात्विक इतिहास	22-23
17.	सकारात्मक सोच	24
18.	चल अकेला चल अकेला चल	25
19.	हरियाली देखो- आई हरियाली	26
20.	संकल्प से सिद्ध	27
21.	गमलों में स्वास्थरक्षक पौधें	28-30
22.	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ	31-41
23.	कार्यालय में लिखी जाने वाली सामान्य टिप्पणियाँ	42-44
24.	फोटो गैलरी	45-47

कंठस्थ 2.0 (स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर)

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह अनुवाद टूल भारत सरकार के गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा विकसित करवाया गया है। इसके माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अग्रेजी में शत-प्रतिशत तक सटीक अनुवाद संभव है।

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुन: प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी एम के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी एम का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है। टी एम का डेटाबेस दो प्रकार का होता है: ग्लोबल ट्रासलेशन मेमोरी (जी. टी. एम.) तथा लोकल ट्रासलेशन मेमोरी (एल टी एम)। एल.टी एम. प्रत्येक अनुवादक के कम्प्यूटर पर अलग-अलग होती है.

जबकि जी.टी. एम एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। परीक्षण के पश्चात विभिन्न एल टी.एम. जी.टी.एम का भाग बन जाती है।

कंठस्थ 2.0 की मुख्य विशेषताएं

लोकल एवं ग्लोबल टी एम बनाना, वर्क-फ्लो संयोजन, अनुवाद के लिए टी. एम. से पूर्ण मिलान, अनुवाद के लिए टी एम से आंशिक मिलान, पैकेज बनाने / अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, प्रोजेक्ट बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, फाइल को अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा, अनुवादित फाइल का विश्लेषण अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की सख्या प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट, एक समय-विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्ट, न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन, चेटबॉट, गुणवत्ता निर्धारक मानदंड, द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना, विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन, फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना आदि।

इसे https://kanthasth-rajbhasha.gov.in/ से अथवा कंठस्थ ऐप के माध्यम से उपयोग किया जा सकता है|

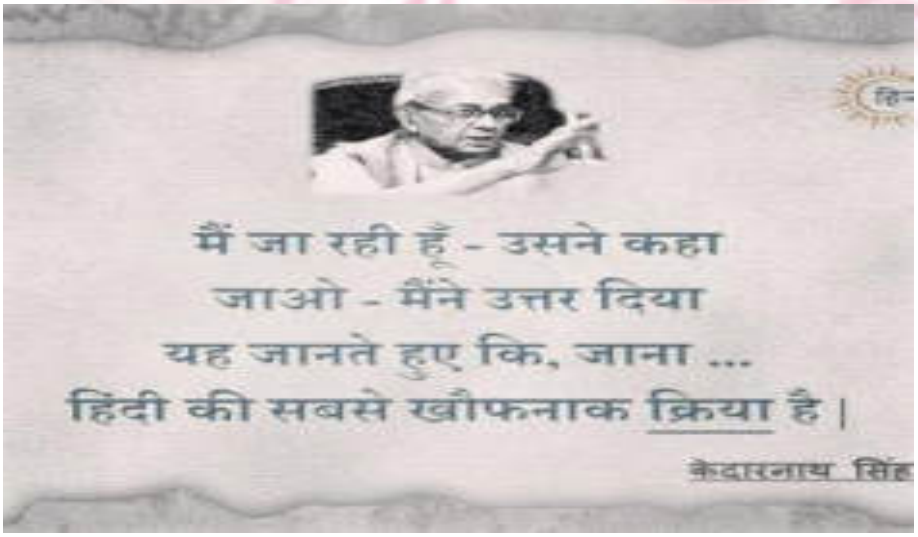

हिंदी शब्द सिंधु

हिंदी शब्द सिंधु बृहत शब्दकोश देश की अन्य भाषाओं से हिंदी को समृद्ध करने की दिशा में विकसित किया गया है। इसमें विभिन्न विषयों-जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वैमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलैक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से सबंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया गया है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारियाँ दी गई है। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चेबल) है। यह शब्दकोश पूर्णतः अद्यतन और समावेशी है तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह है। इस शब्दकोश में हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के शब्द, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द मीडिया और न्यू मीडिया के शब्द, तकनीक और विज्ञान के शब्द तथा विधि एवं न्याय के शब्द भी शामिल किए जा रहे हैं। यह पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित है तथा इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार तैयार किया गया है। इसमें यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग किया जा रहा है तथा इसमें हिंदी, अंग्रेजी में टंकण कर शब्द खोजने की सुविधा है।

भारतीय तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा ऑलिव रिडले समुद्री कछुए का संरक्षण

ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ (लेपिडोचिल्स ओलिवेसिया), जिसे आमतौर पर प्रशांत रिडले समुद्री कछुए के रूप में भी जाना जाता है , चेलोनीडे परिवार में कछुए की एक प्रजाति है । यह प्रजाति दुनिया में पाए जाने वाले सभी समुद्री कछुओं में दूसरी सबसे छोटी और सबसे प्रचुर प्रजाति है। ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ गर्म और उष्णकटिबंधीय पानी में पाया जाता है। यह कछुआ अपने अनूठे समकालिक सामूहिक घोंसलों के लिए जाना जाता है जिन्हें **'अरिबाडास'** कहा जाता है, जहां हजारों मादाएं अंडे देने के लिए एक ही समुद्र तट पर एक साथ आती हैं।

ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ लगभग 61 सेमी (2 फीट) की लंबाई तक बढ़ता है। इसका सामान्य नाम इसके जैतून के रंग के कैरपेस से मिलता है, जो दिल के आकार का और गोल होता है। नर और मादा एक ही आकार के होते हैं, लेकिन मादाओं का खोल नर की तुलना में थोड़ा अधिक गोल होता है। इसका सिर मध्यम आकार का, चौड़ा होता है जो ऊपर से त्रिकोणीय दिखाई देता है। इसके अगले पैर चप्पू जैसे होते हैं, प्रत्येक में दो अगले पंजे होते हैं। ऊपरी भाग भूरे-हरे से लेकर जैतून तक के रंग के होते हैं, लेकिन कभी-कभी कवच पर उगने वाले शैवाल के कारण लाल रंग के दिखाई देते हैं। ऑलिव रिडले समुद्री कछुए का वजन शायद ही कभी 50 किलोग्राम (110 पाउंड) से अधिक होता है।

ऑलिव रिडले कछुए भारत, अरब, जापान और माइक्रोनेशिया से लेकर दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक प्रशांत और भारतीय महासागरों के उष्णकटिबंधीय और गर्म पानी में रहते हैं। अटलांटिक महासागर में, इसे अफ्रीका के पश्चिमी तट और उत्तरी ब्राजील, सूरीनाम , गुयाना , फ्रेंच गुयाना और वेनेजुएला के तटों पर देखा गया है। इसके अतिरिक्त, ऑलिव रिडले को कैरेबियन सागर में सुदूर उत्तर में प्यूर्टो रिको तक दर्ज किया गया है। ऐतिहासिक रूप से, इस प्रजाति को व्यापक रूप से दुनिया में सबसे प्रचुर समुद्री कछुआ माना जाता है फिर भी वैश्विक स्तर पर ऐतिहासिक स्तर से उनकी संख्या में 30% से अधिक की गिरावट आई है। इन कछुओं को दुनिया में उनके कुछ ही घोंसले के स्थान बचे होने के कारण लुप्तप्राय माना जाता है।

ऑलिव रिडले कछुए दो अलग-अलग घोंसला बनाते हैं, जिसमें सबसे प्रचलित एकान्त घोंसला बनाना है। साथ ही, सिंक्रनाइज़ सामूहिक घोंसला बनाना, जिसे अरिबाडास कहा जाता है । मादाएं अंडे देने के लिए उसी समुद्र तट पर लौटती हैं जहां से उन्होंने पहले अंडे दिए थे। वे अपने अंडे लगभग 1.5 फीट गहरे शंक्वाकार घोंसलों में देते हैं, जिन्हें वे कड़ी मेहनत से अपने पिछले पैरों से खोदते हैं। हिंद महासागर में, होनावर कर्नाटक के पास अरब सागर में, ओडिशा में गहिरमाथा के पास दो या तीन बड़े समूहों में अधिकांश जैतून रिडले घोंसले बनाते हैं । हालाँकि ऑलिव रिडले अपने अरिबाडा के लिए प्रसिद्ध हैं , अधिकांश घोंसले वाले समुद्र तटों पर केवल घोंसले बनाने वाली मादाएं ही आती हैं।

ओडिशा (भारत) के केंद्रपाड़ा जिले में गहिरमाथा समुद्र तट, जो अब भितरकनिका वन्यजीव अभयारण्य का एक हिस्सा है, इन कछुओं के लिए सबसे बड़ा प्रजनन स्थल है। यह जैतून रिडले समुद्री कछुओं का दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञात स्थान है। गहिरमाथा के अलावा, दो अन्य सामूहिक घोंसले वाले

समुद्र तट हैं, जो रुशिकुल्या और देवी नदियों के मुहाने पर हैं। ओलिव रिडले समुद्री कछुए हर साल नवंबर की शुरुआत से उड़ीसा के तट पर घोंसला बनाने के लिए बड़ी संख्या में प्रवास करते हैं। गहिरमाथा तट पर हर साल घोंसले बनाने की संख्या 1,00,000 से 5,00,000 के बीच होती है। हाल के दिनों में बड़े पैमाने पर मृत्यु दर के कारण इन कछुओं की आबादी में गिरावट आई है। ऑलिव रिडले समुद्री कछुए को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (संशोधित 1991) की अनुसूची - । में सूचीबद्ध किया गया है। ओलिव रिडले कभी-कभी खुले पानी में पाए जाते हैं। इस प्रजाति द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई आवास और भौगोलिक इलाके इसके पूरे जीवनचक्र में भिन्न-भिन्न होते हैं।

ऑलिव रिडले अंडों के ज्ञात शिकारियों में रैकून, कोयोट, जंगली कुत्ते और सूअर, ओपोसम्स , कोटिमुंडी, केमैन, केकड़े और सनबीम सांप शामिल हैं । जब बच्चे समुद्र तट से पानी की ओर यात्रा करते हैं तो गिद्ध, फ्रिगेट पक्षी, केकड़े, रैकून, कोयोट, इगुआना और सांप उनका शिकार कर लेते है । समुद्री कछुए तुलनात्मक रूप से रक्षाहीन होते हैं, क्योंकि वे मीठे पानी और स्थलीय कछुओं की तरह अपने सिर को अपने खोल में नहीं खींच सकते हैं। तटीय विकास, प्राकृतिक आपदाएँ, जलवायु परिवर्तन और समुद्र तट के कटाव के अन्य स्रोतों को भी घोंसले के लिए संभावित खतरों के रूप में उद्धृत किया गया है। हालाँकि, ऑलिव रिडले अंडे के नष्ट होने का सबसे बड़ा कारण अरिबाडास है , जिसमें घोंसला बनाने वाली मादाओं का घनत्व इतना अधिक होता है कि पहले से बिछाए गए घोंसले अन्य घोंसले बनाने वाली मादाओं द्वारा अनजाने में खोदे और नष्ट कर दिए जाते हैं।

प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ के अनुसार ऑलिव रिडले को 'असुरक्षित' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ओडिशा के सभी समुद्र तटों, विशेष रूप से गहिरमाता अभयारण्य में ऑलिव रिडले कछुओं की सुरक्षा के लिए भारतीय तटरक्षक बल के अथक प्रयासों से उल्लेखनीय सफलता मिली है, जिसके परिणामस्वरूप संरक्षित क्षेत्रों में कोई अवैध शिकार गतिविधि न होने के कारण कछुओं के बच्चों की जीवित रहने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारतीय तटरक्षक के इन्हीं प्रयासों के चलते इस वर्ष ओडिशा तट पर लगभग 5 लाख से अधिक कछुए आये।

अध्ययन में अनुवाद का महत्व

भारतीय समाज एक बहुभाषिक समाज है| सिर्फ भारत में लगभग 121 भाषाएँ है| हालांकि भारतीय संविधान में सिर्फ 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है| उत्तर-पश्चिम में पंजाबी, हिंदी और उर्दू; पूर्व में उड़िया, बांग्ला और असमिया, मध्य-पश्चिम में मराठी और गुजराती तथा दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम प्रमुख भाषाएँ है| इनके अतिरिक्त और भी भाषाएँ हैं जिनका साहित्यिक और भाषा-वैज्ञानिक महत्व कम नहीं है – जैसे कश्मीरी, डोगरी, सिंधी, कोंकणी, मैथली, बोड़ो आदि| इन सभी भाषाओं के साहित्य की अपनी विशिष्टता है| फिर भी यह भिन्नता उनकी आत्मा की नहीं है| जिस प्रकार भिन्न धर्मों, विचारधारों और जीवन-प्रणालियों के होते हुए भी भारतीय संस्कृति की एकता असंदिग्ध है उसी प्रकार इसकी भाषाओं में लिपि तथा व्याकरणिक भिन्नता होते हुए भी इसके साहित्य भारतीयता के एकल रूप को ही दर्शाते हैं|

आज विभिन्न भारतीय भाषाओं में क्या लिखा जा रहा है- यह जानने के लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है| हम एक से अधिक भाषाएँ जान सकते हैं लेकिन कितनी – दो, तीन, चार अथवा पाँच| किन्तु भारतीय साहित्य का सृजन बीस से अधिक भाषाओं में हो रहा है| अत: अनुवाद ही एक ऐसा सहज माध्यम है जिससे हम अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे जाने वाले साहित्य का अध्ययन व्यापक स्तर पर कर सकते है| साथ ही यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि अनुवाद की गुणवत्ता महत्वपूर्ण स्थान रखती है| भारतीय भाषाओं की रचनाओं के हिंदी अनुवाद के साथ-साथ अँग्रेजी अनुवाद भी काफी प्रचलन में है| संस्कृत में लिखी वैदिक साहित्य के सभी अंगों का भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अँग्रेजी में पूर्णत: अथवा अंशत: अनुवाद हो चुका है|

किसी भी प्रकार के अध्ययन में तुलना का अध्ययन विधि का मुख्य अंग है और जब हम तुलनात्मक अध्ययन की बात करते हैं तो हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते है कि बिना अनुवाद के हम तुलनात्मक अध्ययन कर ही नहीं सकते हैं और जब कई साहित्यों के साथ तुलना करने की आवश्यकता होती है तो एक अध्ययन कर्ता के लिए यह संभव नहीं हो पाता है कि भिन्न भाषाओं में सृजित साहित्य पर उसका समान अधिकार हो उस समय उसे अनुवाद का सहारा लेना आवश्यक होता है| एक विशेष काल खंड में विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विविधता के साथ उसके मूल में एकता का आभास भी कराता है और मानवीय अभिव्यक्ति की एकसूत्रता की ओर इशारा करता है| जब किसी समान पाठ-सामग्री का अनुवाद अलग-अलग अनुवादकों के द्वारा किया जाता है तो उनकी प्रस्तुति, शब्द, अर्थ, व्याकरणिक स्तर पर भिन्नता हो सकती है और यह भी इसी तरह एक तुलनात्मक अध्ययन का विषय बन जाता है|

किसी भी भाषा के शिक्षण अथवा अध्ययन में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है| भाषा शिक्षण किसी भी समाज की शिक्षा व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है| जब एक बालक अध्ययन के लिए

तत्पर होता है तो उसकी शिक्षा का प्रारम्भ भाषा और गणित की शिक्षा से होता है| इन दोनों की प्राथमिक जानकारी होने पर ही उसे अन्य विषय पढ़ाये जाते है| जब बच्चा एक निश्चित आयु को प्राप्त करता है तो हमारी शिक्षण प्रणाली उसे दूसरी भाषा सीखने के लिए तत्पर करती है और इसी स्तर पर आकर शिक्षण पद्धति को अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है| अनुवाद भाषा शिक्षण की परंपरागत और सिद्ध पद्धति है| मातृभाषा अथवा प्रथम भाषा का जो संरचनागत ढाँचा व्यक्ति के मस्तिष्क में व्यावहारिक स्तर पर विद्यमान होता है उसका उपयोग इस पद्धति से दूसरी भाषा को सिखाने में कर लिया जाता है|

विदेशी भाषाओं में उपलब्ध प्राचीन एवं नवीन ज्ञान के भंडार को जानने में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है| विदेशी धरातल पर ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न खोज एवं अनुप्रयोग हो रहे है| सामान्यत: एक भारतीय अँग्रेजी भाषा का ज्ञान तो रखता है लेकिन अन्य भाषाओं जैसे- जर्मन, रूसी, जापानी, फ्रांसीसी, चीनी आदि में प्रकाशित होने वाली जानकारियाँ सिर्फ अनुवाद के माध्यम से ही हमें प्राप्त हो सकती है| जब किसी पाठ्य सामग्री का निर्माण किया जाता है तो उस समय भी अनुवाद का सहारा लिया जाता है| जब किसी विषय की अध्ययन सामग्री का निर्माण किया जाता है तो यह ध्यान रखा जाता है कि विषयगत सभी जानकारियों को एकत्रित किया जाए चाहे वह किसी अन्य भाषा में ही क्यों न हो और उस समय हमें इस कार्य को करने की क्षमता सिर्फ अनुवाद ही प्रदान कर सकता है|

किसी भी शिक्षण का अंतिम पड़ाव मूल्यांकन होता है| भारतीय शिक्षण पध्दति द्विभाषिक अथवा बहुभाषिक है| शिक्षण सामग्री कई भाषाओं में तैयार की गई है जिससे की अलग-अलग भाषाओं के माध्यम से पढ़ने वाले छात्र अपनी-अपनी भाषा के माध्यम से पढ़ाई करें| संघीय व्यवस्था के कारण केंद्र एवं राज्यों में शिक्षा की व्यवस्था दोहरे शिक्षा माध्यम से चल रही है| ऐसी स्थिति में पढ़ाई जिस माध्यम से हुई हो उसी माध्यम में परीक्षा भी होनी चाहिए| अत: विभिन्न भाषाओं में मूल्यांकन सामग्री तैयार करने की आवश्यकता होती है| जैसे कि विभिन्न भाषाओं में पाठ्य सामग्री भी अनुवाद के माध्यम से तैयार की जाती है उसी तरह मूल्यांकन सामग्री भी अनुवाद के माध्यम से तैयार की जाती है| इसी तरह अनेकों पात्रता एवं चयन परीक्षाओं में परीक्षा सामग्री अनुवाद के माध्यम से तैयार की जाती है जिससे अलग-अलग भाषाओं में अध्ययन करने वाले परीक्षार्थियों को समान अवसर प्रदान किया जा सकें|

गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

बधाई हो, लड़का हुआ है

बधाई हो, लड़का हुआ है
आपके दुखों को हरने वाला दुखहर्ता हुआ है
अंधकार में प्रकाश पुंज
बुढ़ापे की लाठी
कुल का चिराग
और न जाने क्या-क्या हुआ है
बधाई हो, लड़का हुआ है

आपकी बाधाएँ कम होंगी
समस्याएँ छूमंतर होंगी
जन्म के साथ ही उसको दायित्व का ज्ञान दें।
वह क्या चाहता है यह जानने से पहले
आप क्या चाहते है
इस पर लंबा व्याख्यान दें
उसे सुख-सुविधाएं तमाम दें
क्योंकि अब हर सामान सस्ता हुआ है
आपके दुखों को हरने वाला दुखहर्ता हुआ है
बधाई हो, लड़का हुआ है।

क्या पढ़ना, क्या खेलना है
कब सोना, कब जागना है
इन सब बातों पर कमान रहें
वंश का चिराग कब कितना तेज हो
इस बात का ध्यान रहें
समय पर अपने अनुभव का ज्ञान दें
न जाने कब वह इसे लेना बंद कर दें

ऐसा कुछ न हो, अभी से आप सजग रहें।

अब तो कष्टों का अंत हुआ है
आपके दुखों को हरने वाला दुखहर्ता हुआ है
बधाई हो, लड़का हुआ है।

अपनी आशाओं का बोझ, उस पर उड़ेलते रहें
जरूरत लगे तो उस पर होने वाले खर्च पर व्याख्यान दें।
कभी-कभी बाहरी उदाहरणों का सहारा लें।
उसकी कम सुनिए, अपनी पूरी कहिए
आप जो चाहे, वही उसे करना है।
क्योंकि असंभव, अब संभव हुआ है
आपके दुखों को हरने वाला दुखहर्ता हुआ है
बधाई हो, लड़का हुआ है।

गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

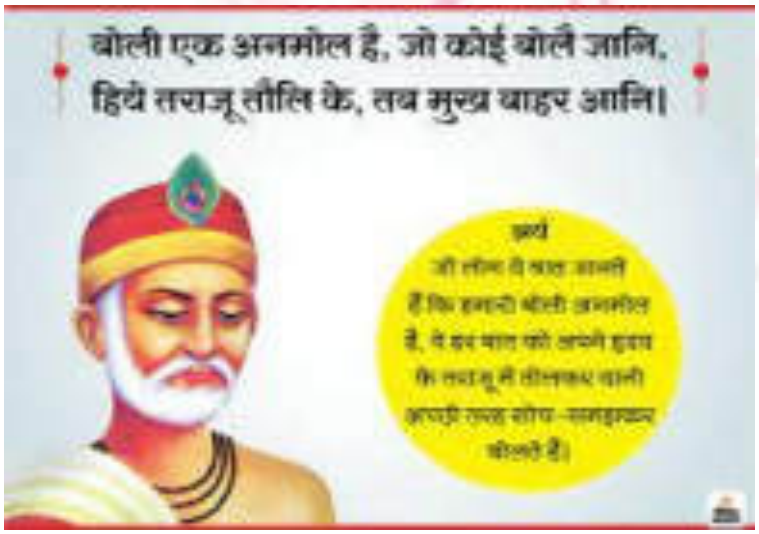

सफर जिंदगी का सुहाना

सफर जिंदगी का सुहाना
कभी कुछ खोना तो कभी कुछ पाना|
कभी कुछ पा कर खोना
फिर कुछ समय के लिए रोना-धोना
यूं ही यह कारवां ए जिंदगी चलता रहेगा
कुछ लोग मिलेंगे और कुछ बिछड़ेंगे
मगर सफर यूं ही चलता रहेगा

मगर प्रेम का भाव रहना चाहिए
लोगों में सद्भाव रहना चाहिए
समस्याओं का समाधान रहना चाहिए
परिवार का साथ रहना चाहिए
दोस्तों का नजदीक होना चाहिए

जिंदगी! आज मैंने भी ठानी है
तेरे साथ ही बितानी है
चाहे धूप हो या छाँव
रहे तेरे प्रति मेरा चाव
और कुछ कर दिखाना है
कैसे जीते है तुझे
यह कर के दिखाना है|

गुड्डू कुमार शर्मा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

जीवन

परिवर्तन नियम है जीवन का
स्वीकार इसे करना होगा।
समय का चक्र चलता ही रहता
संग हमें भी चलना होगा।

मुश्किल राह मिलेगी राही
उनमें फूलों को चुनना होगा।
चट्टानों सी बाधाएँ मिले तो
पर्वत बन लड़ना होगा।

राह सरल हो या मुश्किल
हमको दृढ़ निश्चयी बनना होगा।
लक्ष्य न हासिल हो जाए तब तक
अडिग लक्ष्य पर टिकना होगा।

जीवन की अपनी कुछ मर्यादायें है
आहत न हो किसी की खुशियाँ।
हर पहलू पर खरे उतरें हम
इतना स्वयं को बदले हम।
आखिरकर, परिवर्तन, नियम है जीवन का
स्वीकार हमें करना होगा।

वरुण कुमार चौधरी
प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

क्या करें और क्या न करें

जो चीजे करना आसान होता है वही चीजे न करना भी उतना ही आसान है| 'वल्ड रिपोर्ट' के अनुसार अपने जीवन की दौड़ में हम आठ महीने अपनी जंक मेल खोलने में, दो वर्ष फोन की गलत कॉल का जवाब देने में और पाँच वर्ष कतार में खड़े रहने पर व्यतीत कर देते हैं| अत: अगर हम अपने पास एक पुस्तक रखें तो कतार में खड़े समय पर उसे पढ़कर समय का सदुपयोग कर सकते हैं| मोबाइल फोन हमारी खुशी के लिए है न कि उन लोगों के आराम के लिए जो हमें फोन करते हैं अत: हर कॉल को उठाना भी आवश्यक नहीं है| कॉल आने पर तुरंत उसकी ओर भागना ऐसा प्रतीत होता है जैसे आग लगी हो और हम दमकलकर्मी हैं|

परिवर्तन के पहले जागरूकता आती है और एक नई आदत को विकसित करने में कम से कम 21 दिन लगते हैं जैसे नए जूते को पहनने में पहले दिन कठिनाई होती है और फिर धीरे-धीरे वो हमारे पैर के आकार में आरामदायक हो जाते हैं| हम पहले आदत का निर्माण करते हैं और फिर आदत हमारा निर्माण करती है| नियमित व्यायाम करना, सुबह उठना भी एक आदत ही है| सूर्योदय को देखना, भ्रमण करना, चिड़ियों को चहचहाते देखना, बारिश की बूंदों को, भीगी मिट्टी को एहसास करना भी एक आदत हीं है, अच्छी आदत है| प्रकृति के सानिध्य में रहना, छोटे बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलना, नियमित व्यायाम करना हमारी दिनचर्या का हिस्सा होना ही चाहिए|

" जो लोग व्यायाम के लिए समय नहीं निकालते, उन्हें बीमारियों के लिए समय निकालना पड़ता है|"

एक छोटी सी कोशिश या छोटे कार्य की शुरुआत हमेशा बड़े इरादों से बेहतर होते हैं| मानवीय सेवाओं से ज्यादा बड़ा कोई धर्म नहीं है| "थोड़ी सी खुशबू उस हाथ में जरूर रह जाती है जो दूसरों को गुलाब देते हैं|"

धर्मेन्द्र कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

माँ से ही हम हैं

माता, माँ अम्मा
बस लगे एक लफ्ज़
पर तू ऐसी शख्स
खुशी मुझको मिले
यही तेरा लक्ष्य ।

है मेरी कायनात
अगर तू है साथ,
सारी मेरी खुशियाँ
कुछ भी हो हालात ।

मैं हूँ तेरा अक्स
चाहूँ कुछ न बस
सर पर तेरा हाथ

माँ बस रब नहीं
माँ ही सब है
माँ से ये दुनिया
माँ से ही हम हैं।

अरमान ज़फर
प्रधान नाविक
तटरक्षक जिला मुख्यालय-8

कविता लिखने मैं चला

कविता लिखने मैं चला
ना चली मेरी कविताई
सामने मेरे जब वह आई,
उनके बारे में पेन चली।

कविता लिखने मैं चला
ना चली मेरी कविताई

आने वाला है, ग़णतंत्र दिवस
सोच रहा हूँ उसके बारे में बस
झंडा ऊँचा जा के लहरा गई
इतने में उनकी जुल्फें लहरा गई।

कविता लिखने मैं चला
ना चली मेरी कविताई

झंडा लहराउंगा इतना ऊँचा
ना लहराया होगा कोई दूजा,
बाटूंगा खुशी से इतनी मिठाई
इतने में ही उन्होनें ली अंगड़ाई।

कविता लिखने मैं चला
ना चली मेरी कविताई

टीवी मिल जुल कर लेंगे देख
दिल्ली में हो रही होगी परेड
लिखूंगा इसके बारे में दो-दो लाईन
लिखाई उनके बारे में हो गई फाईन।

कविता लिखने मैं चला
ना चली मेरी कविताई ।

रजनीकांत,
अधिकारी (एम ई)
त.र.जि.मु.-8

शांति की खोज

शांति शांति शांति की खोज में,
निकल पड़ा मनुष्य।
जल रहा मनुष्य,
किधर मिले शांति शांति शांति।

शांति की खोज में
निकल पड़ा मनुष्य।

इमारतें खड़ा कर रहा मनुष्य
बिजनेस बढ़ा रहा है मनुष्य,
धन धान्य बढ़ रही है फिर भी
शांति नहीं मिल रही है किधर भी।
किधर मिले शांति शांति शांति

शांति की खोज में
निकल पड़ा मनुष्य

अध्यात्मिक शांति की बातें कर रहा है, मनुष्य
मिल गई है शांति
भ्रम में है मनुष्य ,
फिर भी अंधे की तरह दौड़ रहा है मनुष्य।

किधर मिले शांति शांति शांति
शांति की खोज में

निकल पड़ा मनुष्य
दुनिया बटोर रहा मनुष्य,
फिर भी खोज रहा है मनुष्य
कहीं तो मिले शांति शांति
कब मिलेगी इसे शांति।
किधर मिले शांति शांति शांति
शांति की खोज में

बहुत ही आसान मार्ग है शांति का
बनो निस्वार्थी, संतोषी और परोपकारी।

रजनीकांत,
अधिकारी (एम ई)
त.र.जि.मु. - 8

हिन्द की हिन्दी

संस्कार की संस्कृति,
संस्कृत का अंश और सारथी हो तुम !
हिन्दकुश जैसी अडिग महारथी हो तुम !!
जिसके हर कण में माटी की सुगंध छलके,
एक एहसास हो तुम !!!

भावनाओं की परिभाषा,
हर भारतीयों की अभिलाषा हो तुम !
हिन्द के गौरव का अभिमान,
मंत्रमुग्ध करने वाली भाषा हो तुम !!
हाँ, हिन्द की हिन्दी, मातृभाषा हो तुम !!!

कुन्दन कुमार
अवर श्रेणी लिपिक
02354
भारतीय तटरक्षक अवस्थान
फ्रेज़रगंज

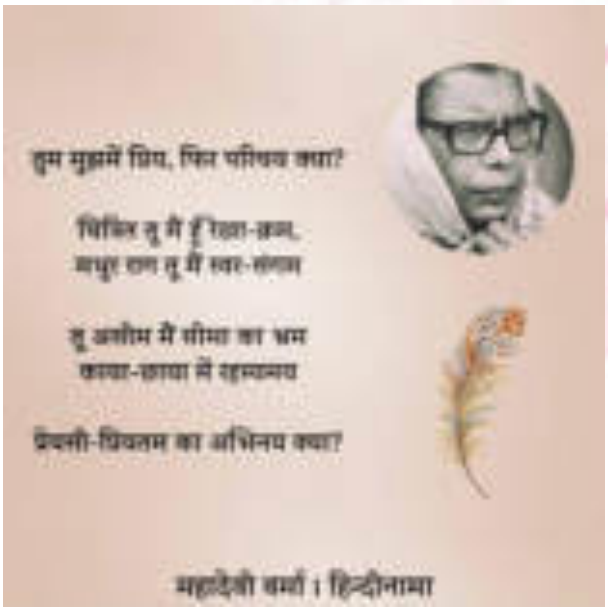

रेत में आकृति

इस अनंत वसुधा पर
देखो एक रेत का सागर
लेट गया है बाँह पसारे
भेंट रहा जाने पहचाने
सारे चेहरों का प्यार

फेंक रहा रुप स्वरूप
अभ्यंतर की आग
अंदर की शीतलता
बढ़ने का आगाज़

जड़ का चेतन का
मुक्ति बंधन का
कठिन सरल का सार
विरल, सघन, गति और मद्धम
रंग श्वेत और श्याम

यह रेत का सागर
तट के आगे
लेटा रहता है हरदम
धूप में बरसात में।

श्रीमती ऋचा सिंह
धर्मपत्नी, आशिष सिंह, अधिकारी
भारतीय तटरक्षक पोत कमलादेवी

मजबूरी

कुछ ना कह पाने की मजबूरी

दिल पे भारी है

कुछ भी कहने की मजबूरी

बुद्धि पर भारी है

रिश्तों के टूटने की मजबूरी

विवेक पर भारी है

रिश्तों को निभाने की मजबूरी

हम पर भारी है

ऐसी मजबूरी की मजबूरी

क्यों निभाना जरुरी है |

सौरभ कुमार गुप्ता
चार्जमैन
एच एम यू (हल्दिया)

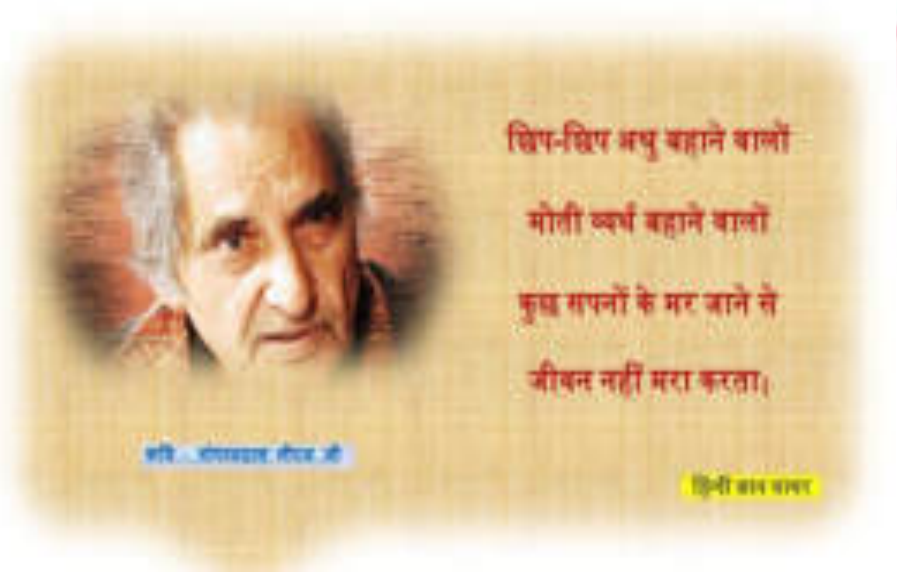

भारत की साइबर सुरक्षा पर पुनर्विचार

1. संदर्भ. आज इंटरनेट हमारे दैनिक जीवन के अभिन्न अंगों में से एक बन गया है। वह हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। साइबरस्पेस हमें वर्चुअल रूप से दुनिया भर के करोड़ों ऑनलाइन उपयोगकर्त्ताओं से जोड़ता है।जैसे-जैसे भारत का इंटरनेट आधार बढ़ता जा रहा है (वर्ष 2025 तक 900 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्त्ता होने के अनुमान के साथ), साइबर खतरों में भी चिंताजनक रूप से वृद्धि हो रही है। डिजिटल प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ साइबर अपराधों का परिष्करण भी बढ़ रहा है। इस परिदृश्य में यह अनिवार्य है कि भारत अपने साइबरस्पेस में विद्यमान खामियों पर सूक्ष्मता से विचार करे और एक अधिक व्यापक साइबर-सुरक्षा नीति के माध्यम से उन्हें समग्र रूप से संबोधित करे।

2. **साइबर सुरक्षा क्या है**? साइबर सुरक्षा या सूचना प्रौद्योगिकी सुरक्षा कंप्यूटर, नेटवर्क, प्रोग्राम और डेटा को अनाधिकृत पहुँच या हमलों से बचाने की तकनीकें हैं जो साइबर-भौतिक प्रणालियों और महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना के दोहन पर लक्षित हैं।

3. भारत में साइबर हमलों के हाल के कुछ उदाहरण.

(क) वर्ष 2020 में लगभग 82% भारतीय कंपनियों को रैनसमवेयर हमलों का सामना करना पड़ा।

(ख) मई 2017 में भारत के पाँच प्रमुख शहर (कोलकाता, दिल्ली, भुवनेश्वर, पुणे और मुंबई) 'WannaCry' रैनसमवेयर हमले से प्रभावित हुए।

(ग) हाल में एम्स, दिल्ली पर रैनसमवेयर हमला हुआ है। देश के इस शीर्ष चिकित्सा संस्थान के सर्वर पर रैनसमवेयर हमले के बाद लाखों मरीजों का व्यक्तिगत डेटा खतरे में है।

(घ) वर्ष 2021 में एक हाई-प्रोफाइल भारत-आधारित भुगतान कंपनी 'Juspay' को डेटा उल्लंघन का सामना करना पड़ा जिसमें 35 मिलियन ग्राहक प्रभावित हुए।

(ङ) यह उल्लंघन अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि 'Juspay' अमेज़न और कई अन्य बड़ी कंपनियों के ऑनलाइन मार्केटप्लेस के लिये भुगतान से संलग्न है।

(च) फरवरी 2022 में एयर इंडिया को एक बड़े साइबर हमले का सामना करना पड़ा जहाँ लगभग 4.5 मिलियन ग्राहक रिकॉर्ड के लिये खतरा उत्पन्न हुआ। यहाँ पासपोर्ट, टिकट और क्रेडिट कार्ड संबंधी सूचना की गुप्तता भंग हुई।

4. साइबर खतरों के प्रमुख प्रकार.

(क) रनसमवेयर (Ransomware). इस प्रकार का मैलवेयर कंप्यूटर डेटा को हाईजैक कर लेता है और फिर उसे पुनर्स्थापित करने के लिये भुगतान (आमतौर पर बिटकॉइन के रूप में) की मांग करता है।

(ख) <u>ट्रोजन हॉर्सेज़ (Trojan Horses)</u>. ट्रोजन हॉर्स अटैक एक दुर्भावनापूर्ण प्रोग्राम का उपयोग करता है जो एक वैध प्रतीत होने वाले प्रोग्राम के अंदर छिपा होता है। जब उपयोगकर्त्ता संभवतः वैध प्रोग्राम को निष्पादित करता है तो ट्रोजन के अंदर गुप्त रूप से शामिल मैलवेयर का उपयोग सिस्टम में बैकडोर को खोलने के लिये किया जा सकता है जिसके माध्यम से हैकर्स कंप्यूटर या नेटवर्क में प्रवेश कर सकते हैं।

(ग) <u>क्लिकजैकिंग (Clickjacking)</u>. यह इंटरनेट उपयोगकर्त्ताओं को दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर वाले लिंक पर क्लिक करने या अनजाने में सोशल मीडिया साइटों पर निजी जानकारी साझा करने के लिये लुभाने का कृत्य है।

(घ) <u>डिनायल ऑफ सर्विस (DOS) हमला</u>. यह किसी सेवा को बाधित करने के उद्देश्य से कई कंप्यूटरों और मार्गों से वेबसाइट जैसी किसी विशेष सेवा को ओवरलोड करने का जानबूझकर कर किया जाने वाला कृत्य है।

(ङ) <u>मैन इन मिड्ल अटैक' (Man in Middle Attack)</u>. इस तरह के हमले में दो पक्षों के बीच संदेशों को पारगमन के दौरान 'इंटरसेप्ट' किया जाता है।

(च) <u>क्रिप्टोजैकिंग (Cryptojacking)</u>. क्रिप्टोजैकिंग शब्द क्रिप्टोकरेंसी से निकटता से संबद्ध है। क्रिप्टोजैकिंग वह स्थिति है जब हमलावर क्रिप्टोकरेंसी माइनिंग के लिये किसी और के कंप्यूटर का उपयोग करते हैं।

(छ) <u>'ज़ीरो डे वल्नेरेबिलिटी' (Zero Day Vulnerability)</u>. ज़ीरो डे वल्नेरेबिलिटी मशीन/नेटवर्क के ऑपरेटिंग सिस्टम या ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर में व्याप्त ऐसा दोष है जिसे डेवलपर द्वारा ठीक नहीं किया गया है और ऐसे हैकर द्वारा इसका दुरुपयोग किया जा सकता है जो इसके बारे में जानता है।

5. **<u>भारत के साइबरस्पेस से संबंधित चुनौतियाँ</u>.**

(क) <u>क्षमता की वृद्धि, भेद्यता का विस्तार</u>. नागरिकों के डिजिटल एकीकरण के साथ भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था फली-फूली है, लेकिन इसने डेटा चोरी की भेद्यता भी पैदा की है। सरकार विभिन्न क्षेत्रों में 'डेटा प्रवाह' के लिये सभी बाधाओं को दूर करने की अपेक्षा करती थी। इस आख्यान के परिणामस्वरूप टेक-उद्योग ने डेटा संरक्षण के प्रति केवल खानापूरी ही की है।

(ख) <u>विदेशों में डेटा का संग्रहण</u>. लगभग प्रत्येक क्षेत्र में ही डिजिटलीकरण की ओर बढ़ने की होड़ ने भारत के बाहर एप्लीकेशन सेवा प्रदाताओं के साथ सहयोग को बल दिया है, ताकि ग्राहक शीघ्रातिशीघ्र सर्वोत्तम ऐप्स और सेवाओं तक पहुँच सकें। विदेशी स्रोतों से प्राप्त हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर

या भारत के बाहर के सर्वरों पर भारी मात्रा में डेटा की पार्किंग हमारे राष्ट्रीय साइबरस्पेस के लिये खतरा पैदा करता है।

(ग) <u>प्रॉक्सी साइबर अटैक</u>. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) स्वचालित घातक हथियार प्रणाली के निर्माण में सक्षम है जो मानव संलग्नता के बिना ही जीवन और लक्ष्य को नष्ट कर सकती है। नकली डिजिटल मुद्रा और नवीनतम साइबर प्रौद्योगिकियों की सहायता से बौद्धिक संपदा की चोरी जैसी अवैध गतिविधियों की भेद्यता से भी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये खतरा उत्पन्न हुआ है।

6. **<u>आगे की राह</u>**.

(क) <u>साइबर-जागरूकता</u>. शिक्षा साइबर-अपराधों की रोकथाम के बारे में सूचना के प्रसार के लिये महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है और युवा आबादी साइबरस्पेस में अपनी भागीदारी के बारे में जागरूक होने तथा साइबर सुरक्षा के लिये और साइबर अपराध रोकने के लिये एक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने के लिये बल गुणक के रूप में कार्य कर सकती है।

(ख) <u>सुरक्षित वैश्विक साइबरस्पेस के लिये टेक-डिप्लोमेसी</u>. उभरते सीमा-पार साइबर खतरों से निपटने के लिये और एक सुरक्षित वैश्विक साइबरस्पेस की ओर आगे बढ़ने के लिये भारत को उन्नत अर्थव्यवस्थाओं तथा प्रौद्योगिकी-उन्मुख लोकतंत्रों के साथ अपनी राजनयिक साझेदारी को सुदृढ़ करना चाहिये।

(ग) <u>सहकारी संघवाद और साइबर सुरक्षा</u>. पुलिस और लोक व्यवस्था राज्य सूची के विषय हैं, इसलिये राज्यों को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि साइबर अपराध से निपटने के लिये विधि प्रवर्तन पूर्ण सक्षम है। आईटी अधिनियम और अन्य प्रमुख कानून केंद्रीय रूप से अधिनियमित किये जाते हैं, इसलिये केंद्र सरकार कानून प्रवर्तन के लिये सार्वभौमिक वैधानिक प्रक्रियाएँ विकसित कर सकती है। इसके साथ ही, केंद्र और राज्यों को आवश्यक साइबर अवसंरचना विकसित करने के लिये पर्याप्त धन का निवेश करना चाहिये।

(घ) <u>अनिवार्य डेटा संरक्षण मानदंड</u>. व्यक्तिगत डेटा से संलग्न सभी सरकारी और निजी एजेंसियों के लिये अनिवार्य डेटा सुरक्षा मानदंडों का पालन करना आवश्यक होना चाहिये। मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये संबंधित प्राधिकारों को नियमित रूप से डेटा सुरक्षा ऑडिट करना चाहिये।

उप समादेशक नितेश कुमार सिंह
प्रभारी अधिकारी
एच एम यू (हल्दिया)

भारत का पुरातात्विक इतिहास

भारत में सबसे पुराने हिंदू मंदिर का खिताब अक्सर मुंडेश्वरी मंदिर को दिया जाता है। बिहार के कैमूर जिले में स्थित यह मंदिर गुप्त काल का माना जाता है, जो लगभग चौथी-पांचवीं शताब्दी ई.पू. का है। यह भगवान शिव और देवी शक्ति को समर्पित है, जो हिंदू और बौद्ध स्थापत्य शैली के संयोजन का प्रतीक है।

मुंडेश्वरी मंदिर में जटिल नक्काशी और मूर्तियां हैं, जो प्राचीन भारत की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करती हैं। इसमें एक अद्वितीय गोलाकार गर्भगृह है, जो हिंदू मंदिर वास्तुकला में अपेक्षाकृत दुर्लभ है। सदियों से मंदिर का जीर्णोद्धार और संशोधन होता रहा है, लेकिन इसकी प्राचीन उत्पत्ति इसे एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक और ऐतिहासिक स्थल बनाती है।

भारत की सबसे पुरानी मस्जिद केरल के कोडुंगल्लूर में चेरामन जुमा मस्जिद मानी जाती है। ऐतिहासिक वृत्तांतों के अनुसार, इसका निर्माण 7वीं शताब्दी ईस्वी में पैगंबर मुहम्मद के जीवनकाल के दौरान या उनकी मृत्यु के तुरंत बाद किया गया था। यह इसे भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी मस्जिदों में से एक बनाता है।

चेरामन जुमा मस्जिद ने सदियों से कई नवीकरण और पुनर्निर्माण देखे हैं, और इसकी वर्तमान संरचना विभिन्न कालखंडों से प्रभावित स्थापत्य शैलियों के मिश्रण को दर्शाती है। मस्जिद ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखती है, और इसे भारत की धार्मिक विरासत में एक महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है

केरल के कोडुंगल्लूर में सेंट थॉमस सिरो-मालाबार कैथोलिक चर्च को अक्सर भारत के सबसे पुराने चर्चों में से एक माना जाता है। परंपरा के अनुसार, इसकी स्थापना ईसा मसीह के बारह प्रेरितों में से एक सेंट थॉमस ने पहली शताब्दी ईस्वी में की थी।

चर्च में सदियों से कई बार नवीकरण और पुनर्निर्माण हुआ है, इसलिए वर्तमान संरचना सीधे तौर पर इसके शुरुआती मूल से जुड़ी नहीं हो सकती है। फिर भी, सेंट थॉमस चर्च भारतीय उपमहाद्वीप में ईसाई धर्म की शुरूआत से जुड़ा हुआ ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व रखता है।

मथुरा के कंकाली टीला में श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर को अक्सर भारत के सबसे पुराने जैन मंदिरों में से एक माना जाता है। यह मंदिर जैन धर्म के पहले तीर्थंकर भगवान आदिनाथ से जुड़ा है। मंदिर की सटीक आयु निश्चित रूप से निर्धारित करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि इसकी जड़ें प्राचीन हैं, जो संभवतः एक सहस्राब्दी से भी पुरानी हैं।

समय के साथ मंदिर का नवीनीकरण और संशोधन हुआ है, और इसकी वर्तमान संरचना ऐतिहासिक और स्थापत्य प्रभावों के मिश्रण को दर्शाती है। यह स्थल जैन इतिहास और तीर्थयात्रा में महत्वपूर्ण है, जो भारत में जैन धर्म की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत की खोज में रुचि रखने वाले अनुयायियों और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

बिहार के बोधगया में स्थित महाबोधि मंदिर, भारत के सबसे पुराने और सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध मंदिरों में से एक है। यह उस स्थान को चिह्नित करता है जहां सिद्धार्थ गौतम, बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। ऐसा माना जाता है कि मंदिर परिसर मूल रूप से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था।

महाबोधि मंदिर में सदियों से कई नवीकरण और परिवर्धन हुए, जो विभिन्न स्थापत्य शैलियों को दर्शाते हैं। वर्तमान मंदिर, जिसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है, भारतीय और विदेशी प्रभावों का मिश्रण है। यह बौद्ध तीर्थयात्रा के प्रतीक के रूप में खड़ा है और बौद्ध धर्म में सबसे पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है।

पिंकू पॉल
प्रधान सहायक इंजीनियर
एच एम यू (हल्दिया)

सकारात्मक सोच

जिन घड़ियों में हँस सकते हैं,
खुलकर हँसना सीख जाओ
सुख – दुःख तो आना-जाना
कष्टों को भी हँसकर मिटाना।

सोच को सकारात्मक रखना मन को आनंद दिलाता हैं
जीवन का दृष्टिकोण नई राह दिखता हैं
जैसी सोच रखोगे वैसा जीवन पाओगे
अच्छी सोच अच्छी राह दिखाता है
अच्छी राह द्वारा मनुष्य अपनी मंजिल पाता हैं।

सुखवीर कुमार
उत्तम नाविक (आर ओ)
भारतीय तटरक्षक पोत विजय

चल अकेला चल अकेला चल

चल अकेला चल अकेला चल।
ना रुकना, ना झुकना, कर्म करता जा अपना।
आएंगे सौ कांटे रास्ते में
तुझे आगे है बढ़ना।
आज अगर तकलीफ है तुझे
सुहाना होगा तेरा कल
चल अकेला चल
आंधी तूफ़ान न रोक पाएंगे तुझे
चलता रह तु खुद के सहारे
मंजिल चूमेगी कदम तेरे
चल अकेला चल अकेला चल

राजेश कुमार
प्रधान नाविक
भारतीय तटरक्षक पोत अमोघ

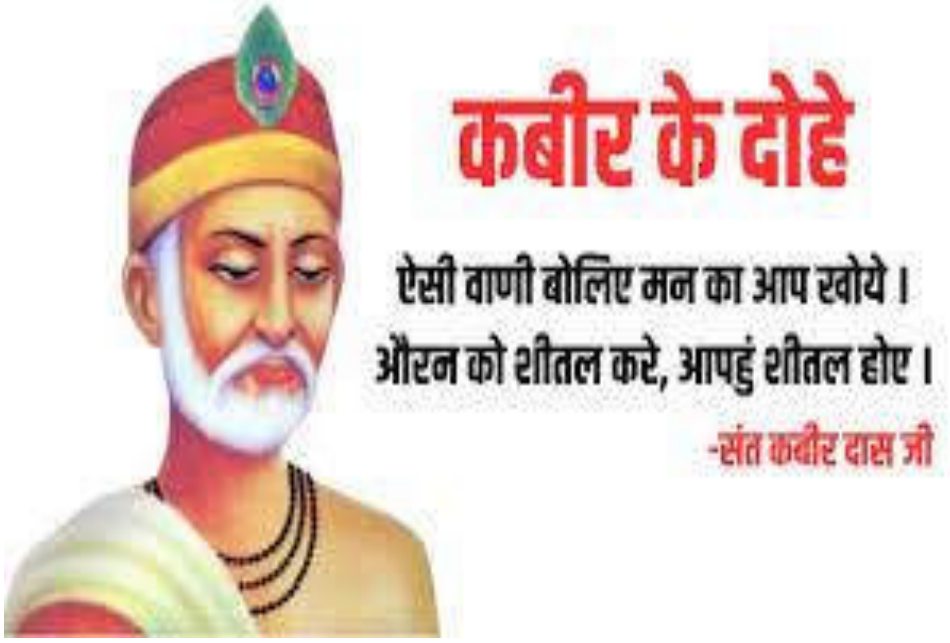

हरियाली देखो- आई हरियाली

हरियाली-हरियाली, देखो आई कैसी हरियाली।

हरियाली, देखों चारो ओर है छाई हरियाली।।

हरियाली का मौसम कैसा, कैसा देखो इसका रूप है

शाम लगे इसकी हरी सी, मखमली सी इसकी धूप है।

सूरज भी जब चमके तो, चमकती इसकी लाली है,

हरियाली-हरियाली, देखो आई कैसी हरियाली।।

ओस की बुँदे पड़े कभी जब, पत्तों से ये फैसले तब

खुशबू लेकर धरती भीगे, खिल जाता है सारा नभ।

वृक्ष लगे-सजे धजे सब, सजी हो हरियाली से धरती

हरियाली, देखो चारो ओर है छाई हरियाली।।

उड़ते हुए ये पक्षी जब, फसलों पर जाकर बैठे।

दाना चुगते है मस्ती से, अंगड़ाई लेकर ऐठें।।

सारे पक्षी शोर मचाते, काली कोयल गाती

हरियाली, देखो चारों ओर है छाई हरियाली।।

हरियाली-हरियाली, देखो आई कैसी हरियाली।

हरियाली, देखों चारो ओर है छाई हरियाली।।

के जे लाल
प्रधान अधिकारी
तटरक्षक तकनीकी
संपर्क कार्यालय (बैरकपुर)

संकल्प से सिद्ध

स्वर्णिम भारत की नवीन सेना
हम है सदैव तत्पर,
लिए संकल्प-सागर के रखवाले
क्षितिज दिगंत जिसके नजर।

घना कोहरें से काँपता धरातल
समुद्री उथल-पुथल व ज्वार हो,
विशाल तरंगों को चीरते पोत हमारे
नभ से निगरानी करते वायुयान जो।

गंगा सागर मेले का जन सैलाब
जिस पर तटरक्षक की है निगरानी,
गणपति बप्पा का विसर्जन पर्व
मुंबई के किनारे श्रद्धालु और पानी।

केरल की बाढ़ से जन मानस जब कर रहा था त्राहि त्राहि
तूफान से पीड़ित तट पर हम है सहारा ग्राही।

तपती आग बुझाने में रिफाइनरी की
तटरक्षक के पोत और विमान कार्यरत,
संकल्प ली सजग तटों पर
सिद्धि है शांति व समृद्ध भारत।

बिरस चंद पात्र
पी एम ई (ए ई)
तटरक्षक तकनीकी संपर्क
कार्यालय (बैरकपुर)

गमलों में स्वास्थरक्षक पौधे

प्राचीनकाल में घरेलू जड़ी-बूटियों एवं रसोई में स्थित मसालों के माध्यम से ही पारिवारिक स्वास्थ्य को दादी-नानियाँ संतुलित रखा करती थी। ये घरेलू जड़ी-बूटियाँ हमारे स्वास्थ्य के लिए अमृत के समान असरदार हुआ करती थी। इन दिनों बाजारू औषधियाँ से होने वाले साइड इफैक्ट को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता जबकि हमारी पारम्परिक औषधियाँ सर्वथा दुष्प्रभावों से मुक्त हुआ करती हैं। हम अपने गमलों अथवा घर के उद्यान में कुछ ऐसे ही औषधीय गुणो से सम्पन्न पौधों को लगा दे तो निःसंदेह वर्षपर्यंत सर्दी जुकाम, उल्टी, दस्त, मौसमी बुखार, मुँह के छाले आदि अनेक व्याधियों से सहज ही छुटकारा पा सकते हैं। ऐसे ही कुछ घरेलू पौधों के विषय में जानकारी प्रस्तुत है: -

(क) **घृतकुमारी** – आयुर्वेद में घृतकुमारी को ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है जबकि अँग्रेजी में एलोवेरा के नाम से सर्वाधिक मशहूर है। इस पौधे में पत्तियाँ बेलनाकार तना के आकार में होती है और अत्यंत चिकने होते है। इनकी पत्तियों के अंदर घी जैसा चिकना गुदा भरा रहता है। महिलाओं की बीमारी कष्टार्तव, अनार्तव (मासिक धर्म), ल्यूकोरिया आदि में यह अमोघ औषधि मानी जाती है। कष्टार्तव एवं अनार्तव अर्थात् पीरियड कष्ट से होना तथा पीरियड के अवधि में पीरियड न अथवा कम होने की स्थिति में इससे बनाये गये क्वाथ को 20-30 मिलीलिटर की मात्रा में देते रहने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। विभिन्न प्रकार के उदर रोगों, प्लीहावृद्धि, उदरकृमि, रक्तविकार व यकृतविकार भी घृतकुमारी के सेवन से ठीक होते हैं। यदि रोज 25 ग्राम गुदें का नित्य सेवन किया जाए तो उदर संबंधी अधिकांश बीमारियों का नाश हो जाता है।

(ख) **अजवायन** – अजवायन के पौधों को आयुर्वेद शास्त्र में पूर्व यवानी के नाम से जाना जाता है। वनस्पति शास्त्र में इसका वानस्पतिक नाम 'कोलिअस अंबोइनिकस' है। इसे गमले में भी लगाया जा सकता है और सिर्फ इसका डंढल भी लग जाता है। यह पौधा फैलता है तथा खूबसूरती भी प्रदान करता है। इसकी पत्तियों में अजवायन के समान ही गंध आती है। नर्सरियों में इसका पौधा आसानी से उपलब्ध हो जाता है। बिना किसी अतिरिक्त देखभाल के इसका पौधा फैलता चला जाता है। उल्टी होने पर, अपच होने पर डकार आने पर इसकी पत्तियों के रस को लेने से तुरंत आराम मिलता है।

(ग) **गिलोय** - आयुर्वेद शास्त्र में गिलोय को गुडुचि, चक्रांगी, अमृता आदि नामों में भी पुकारा जाता है। इसका वनस्पतिक नाम टिनोस्पोरा-कार्डिफोलिया है। इसकी पत्ती खूबसूरत हृदयाकार एवं कोमल होती है। इसे भी गमलों में लगाया जा सकता है। इसकी बेल (लता) होती है। गिलोय की बेल स्वास्थ्य की दृष्टि से अमृत के समान मानी जाती है। इसके तने को गन्ने की तरह भी चूसा जा सकता है। एसिडिटि, रक्त विकार, बुखार, मधुमेह एवं सामान्य कमजोरी को समूल नाश करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसके निरंतर सेवन से कभी भी ज्वर/बुखार की समस्या नहीं आती है।

(घ) **तुलसी** – इसे हिन्दू धर्म का एक धार्मिक पौधा माना जाता है। इसका वनस्पतिक नाम 'आसिमम – सैंकतम' है।तुलसी के पौधे के अनेक प्रकार है। श्यामा तुलसी की पत्तियाँ खांसी, जुकाम, उदर कृमि, चर्म विकार, दंतवेदना, कान दर्द, दमा, हृदय दौर्बल्यता, मलेरिया आदि को सहजता से दूर कर सकती है। जिस स्थान पर तुलसी का पौधा लगा होता है वहां मच्छर एवं अन्य विषाक्त जीव – जन्तु नहीं आते। इसे भी गमले में आराम से लगाया जा सकता है। इस प्रकार गमलों में स्वास्थ्यरक्षक पौधों को लगाकर इनका लाभ उठाया जा सकता है।

(ङ) **शतावरी** – वनस्पति शास्त्र में इसे ऐस्पेरेगम रैसी मौसम कहा जाता है। गमलों में लगायी जा सकने वाली यह एक खूबसूरत बेल है। इसकी चढ़ान तीस-फुट ऊंची तक होती है। इसके पौधों की जड़ में लगने वाली कन्द अत्यंत ही चिकित्सोपयोगी होती है। शतावरी की बेल बिना किसी विशेष देखभाल व परवरिश के भी खूब बढ़ती रहती है। मिरगी, नकसीर, मूर्च्छा, उच्च रक्तचाप, स्वप्नदोष, रक्तप्रदर, शुक्राल्पता, एसिडिटी व मानसिक कमजोरी में शतावरी का चूर्ण अत्यंत ही लाभकारी होता है।

आर पी पाण्डेय
प्रधान अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

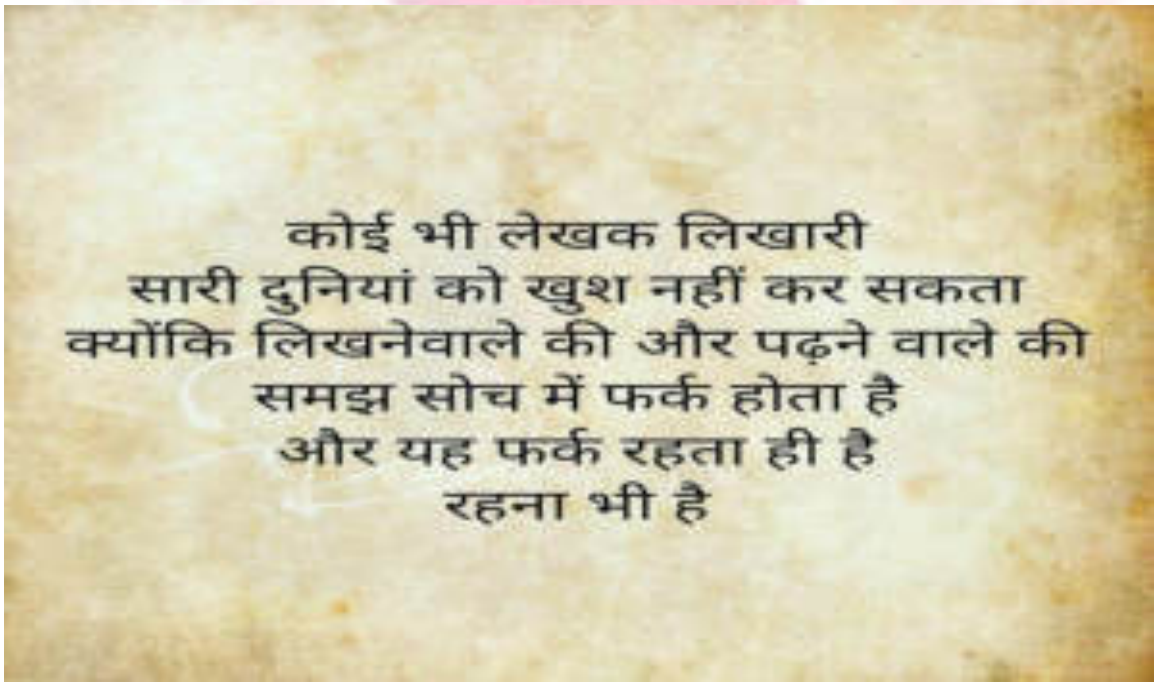

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), को राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार

दिनांक 26 जुलाई 23, को तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उत्तर पूर्व) को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-4), कोलकाता की तीसरी बैठक में संघ सरकार की राजभाषा नीति के सर्वोत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, तटरक्षक पदक, कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व) ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। इस बैठक में नराकास (कार्यालय-4) कोलकाता के सदस्य कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी गण एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) , में हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) में दिनांक 29 सितंबर 23 को हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिनांक 14 सितंबर 23 से 29 सितंबर 23 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन में शामिल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया| इस समारोह के मुख्य अतिथि महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, त.प., कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)थे| हिंदी पखवाड़े के समापन के अवसर पर कमांडर तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) महोदय ने उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन को याद किया जब भारत की संविधान सभा ने एकमत से देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था। उन्होंने अधिकारियों एवं कार्मिकों की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि वे हिंदी में काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं और अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का हर संभव प्रयास करते हैं।

इस अवसर पर कोलकाता स्थित इकाइयों तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण दल, 700 वायु जत्था, तटरक्षक स्टेशन कोलकाता एवं तटरक्षक तकनीकी संपर्क कार्यालय के कार्यालय प्रमुख भी उपस्थित थे|

भारत एवं बांग्लादेश के तटरक्षकों के बीच क्षेत्रीय कमांडर स्तर की बैठक का आयोजन

दिनांक 28 अगस्त 23 को भारतीय तटरक्षक एवं बांग्ला देश तटरक्षक के बीच क्षेत्रीय कमांडर स्तर की बैठक का आयोजन किया गया| वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित यह बैठक क्रमश: 2015 एवं 2017 में दोनों पड़ोसी देशों के तटरक्षकों के बीच हस्ताक्षरित ज्ञापन और मानक संचालन प्रक्रिया के प्रावधानों के तहत आयोजित की गई थी| इस बैठक में अंतर्राष्ट्रीय जल सीमा क्षेत्र में मछली पकड़ने के बारे में मछुवारों को जागरूक करने, अवैध क्रियाकलापों के बारे में दोनों बलों में सूचना साझा करने और क्षमता निर्माण जैसे समुद्री सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय तटीय स्वच्छता दिवस का पालन

दिनांक 16 सितंबर 23 को तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय तटीय स्वच्छता दिवस का पालन का पालन किया गया| इस दिन बंगाल एवं ओड़िशा के समुद्री तटों पर बड़े पैमाने पर सफाई अभियान चलाया गया| बंगाल के हल्दिया, फ्रेजरगंज और कोलकाता के अलावा ओड़िशा के पारादीप, पुरी और बटेश्वर में समुद्री/नदी तटों पर आयोजित इस मेगा सफाई अभियान में 2500 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया तथा इस दौरान 1500 किलोग्राम समुद्री और प्लास्टिक कचरा एकत्रित किया गया|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) ने ओड़िशा और पश्चिम बंगाल तट पर संयुक्त तटीय सुरक्षा अभ्यास 'सागर कवच' का किया आयोजन

भारतीय तटरक्षक ने ओडिशा और पश्चिम बंगाल तट पर तटीय सुरक्षा तंत्र की प्रभावशीलता को मान्य करने के लिए ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्य के लिए एक संयुक्त अभ्यास सागर कवच का आयोजन किया। अभ्यास 21 सितंबर 23 को 0800 बजे शुरू हुआ और 22 सितंबर 23 को 1800 बजे समाप्त कर दिया गया। अभ्यास का मुख्य उद्देश्य वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में समुद्र से उत्पन्न होने वाले खतरों का मूल्यांकन करना और मौजूदा मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) को मान्य करना था। उन्नत तटीय सुरक्षा तंत्र के लिए सभी हितधारकों की भागीदारी को भी सुनिश्चित करना था| इस अभ्यास का उद्देश्य स्तरित सुरक्षा व्यवस्था की प्रभावकारिता की जांच करना भी था, जैसे कि हवाई-निगरानी, तटरक्षक और नौसेना के बड़े जहाजों द्वारा गहरे समुद्र में गश्त और तटरक्षक इंटरसेप्टर नौकाओं, समुद्री पुलिस, सीआईएसएफ, सीमा शुल्क और वन विभाग की नौकाओं द्वारा तट के करीब गश्त आदि|

अभ्यास में भाग लेने वाले हितधारकों में भारतीय नौसेना, सेना वायु रक्षा कॉलेज गोपलापुर, समुद्री पुलिस और दोनों राज्यों की राज्य पुलिस, सीआईएसएफ, एकीकृत परीक्षण रेंज, बंदरगाह प्रायोगिक प्रतिष्ठान चांदीपुर, वन विभाग, मत्स्य पालन विभाग, सीमा शुल्क आदि शामिल थे। दोनों राज्यों में बंदरगाह, लाइट हाउस, आव्रजन और विभिन्न खुफिया एजेंसियां भी शामिल थी|

अभ्यास में प्रतिभागियों को दो टीमों यानी आक्रमण (लाल) बल और रक्षा (नीला) बल में विभाजित किया गया था। हमलावर टीम ने राष्ट्र-विरोधी तत्वों के रूप में काम किया, जिन्होंने तटीय क्षेत्र में घुसपैठ करने का प्रयास किया, जबकि रक्षा टीमों ने तटीय सुरक्षा निगरानी की स्थापना की। तटरक्षक बल, भारतीय नौसेना के जहाज और विमान, बीएसएफ, समुद्री पुलिस, सीमा शुल्क और सीआईएसएफ की गश्ती नौकाएं, दो दिवसीय अभ्यास में, समुद्र में तैनात किया गया था, जबकि भूमि बलों को तट और प्रवेश बिंदुओं के पास तैनात किया गया था। हमारे तटीय क्षेत्रों में गैर-राज्य तत्वों द्वारा किसी भी घुसपैठ को रोकने में सतर्कता के लिए पुरुषों और सामग्री की प्रभावकारिता का परीक्षण किया गया था। सभी हितधारकों द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों ने निचले स्तर से उच्च स्तर तक सूचना के निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित किया।

सभी भाग लेने वाली एजेंसियों के लिए उनकी तैयारियों का आकलन करने और एसओपी को अद्यतन करने के लिए वास्तविक समय खतरों की स्थितियों का अनुकरण किया गया। भारतीय तटरक्षक, भारतीय नौसेना, समुद्री पुलिस बल और कस्टम नौकाओं द्वारा समुद्र में सुरक्षा गश्त के माध्यम से उन्नत सुरक्षा उपाय स्थापित किए गए, भारतीय तटरक्षक बल और आईएन विमानों ने ओडिशा और पश्चिम बंगाल के तट पर समुद्र में व्यापक निगरानी की। सागर मित्र बल को ओडिशा में

तैनात किया गया था और मछुआरे निगरानी समूह को पश्चिम बंगाल में मछली पकड़ने वाले बंदरगाहों और मछली लैंडिंग केंद्र स्थानों पर राज्य के मत्स्य विभागों द्वारा तैनात किया गया था।

संयुक्त अभ्यास ने समुद्री मछली पकड़ने वाली नौकाओं का उपयोग करके समुद्र के माध्यम से जहाजों की अनधिकृत पहुंच, उच्च मूल्य वाले लक्ष्यों पर कब्जा, बंदरगाह सुरक्षा, बंधक संकट और खाड़ियों के माध्यम से घुसपैठ जैसे खतरों के खिलाफ तटीय सुरक्षा के सभी क्षेत्रों में संचालन में तालमेल हासिल किया।

यह अभ्यास सभी तटीय सुरक्षा हितधारकों के बीच घनिष्ठ समन्वय को मजबूत करने, प्रगतिशील तालमेल विकसित करने, एसओपी को मान्य करने, ग्रे एरिया की पहचान करने और ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्य के लिए तटीय सुरक्षा तंत्र को बढ़ाने में सहायक था।

महानिदेशक राकेश पाल, पीटीएम, टी एम ने तटीय सुरक्षा का लिया जायजा

महानिदेशक राकेश पाल, पी टी एम, टी एम ने बंगाल में तटीय सुरक्षा स्थिति, परिचालन तैयारियों और बुनियादी ढांचा विकास परियोजानाओं की समीक्षा के लिए 10 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 23 तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) एवं इस मुख्यालय के अधीनस्थ इकाइयों दौरे पर आए हुए थे| आदरणीय महानिदेशक महोदय का गार्ड ऑफ ऑनर के साथ कोलकाता में स्वागत किया गया| इस दौरान उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें बंगाल एवं ओड़िशा में कार्यरत वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया तथा महानिदेशक महोदय को बंगाल एवं ओड़िशा में तटरक्षक बल के परिचालन और चालू बुनियादी ढांचा के संदर्भ में आगामी योजनाओं, तटरक्षक बेड़े के विस्तार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आदि से अवगत कराया गया| इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने सभी को अवगत कराया कि 2025 तक तटरक्षक बल में लगभग 200 गश्ती पोत और 100 विमान होंगे|

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस-2023 का पालन

दिनांक 31 अक्टूबर 23 को तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के शुभ अवसर पर ईको पार्क, न्यू टाउन में ''यूनिटी रन" का आयोजन किया गया| इस अवसर पर लगभग 200 प्रतिभागियों ने दौड़ में हिस्सा लिया और इस कार्यक्रम को सफल बनाया|

तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-8, हल्दिया द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस-2023 का पालन

दिनांक 31 अक्टूबर 23 को तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-8, हल्दिया द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के शुभ अवसर पर हल्दिया में ''यूनिटी रन" का आयोजन किया गया| इस अवसर पर तटरक्षक अधिकारियों व कार्मिकों के साथ सी आई एस एफ, एच डी सी, सीमा शुल्क विभाग, आई ओ सी एल, एन सी सी कैडेट, कई गैर सरकारी संस्थानों एवं स्थानीय निकायों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया|

तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7, पारादीप द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास का आयोजन

दिनांक 21 से 23 नवंबर 23 तक तटरक्षक जिला मुख्यालय संख्या-7, पारादीप द्वारा द्वारा राज्य प्रशासन एवं सभी हितधारकों के साथ संयुक्त रूप से क्षेत्रीय स्तर पर प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास का आयोजन किया गया| आपातकालीन स्थिति में यदि किसी व्यापारी जहाज या अन्य पोत क्षतिग्रस्त होता है तो उस स्थिति में पोत से होने वाले तेल रिसाव के कारण होने वाले समुद्री प्रदूषण को कम कैसे किया जाए तथा तटों को प्रदूषण मुक्त कैसे रखा जाए इस पर सघन अभ्यास किया गया|

भारतीय तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) ने 48 वाँ भारतीय तटरक्षक दिवस स्मरणोत्सव के लिए कोलकाता से हल्दिया तक मोटर साइकिल रैली का आयोजन किया

स्थापना के 48वें वर्ष के उपलक्ष्य में और अपने जवानों की अदम्य भावना को उजागर करने के लिए, भारतीय तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व) ने कोलकाता से हल्दिया तक 'मोटरसाइकिल रैली -2024' शुरू की। मोटरसाइकिल रैली को 15 जनवरी 24 को कोलकाता से महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, टी एम, कमांडर तटरक्षक क्षेत्र क्षेत्र (उत्तर पूर्व) द्वारा हरी झंडी दिखाई गई थी, जिसके दौरान हेड बिजनेस - रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल कंपनी, आईओसीएल और सहित कई सैन्य और नागरिक गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) ने गंगासागर मेले के 182 श्रद्धालुओं को बचाया

दिनांक 16 जनवरी 24 को मंगलवार तड़के मकर संक्रांति के पावन अवसर पर पवित्र स्नान के पश्चात बंगाल के गंगासागर से वापस आ रहे 182 से अधिक तीर्थयात्रियों को भारतीय तटरक्षक ने एक त्वरित राहत एवं बचाव अभियान के द्वारा सुरक्षित बचाया। एक व्यावसायिक जहाज एम वी स्वास्थ्य साथी राज्य के सागर द्वीप पर गंगा सागर मेले से लगभग 400 तीर्थयात्रियों को काकद्वीप लेकर जा रहा था। लेकिन घने कोहरे के कारण दृश्यता बेहद कम होने के कारण यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। भारतीय तटरक्षक ने तुरंत कार्यवाही करते हुए हल्दिया तथा सागर द्वीप से दो होवरक्राफ्ट को रवाना किया।

व्यावसायिकता, प्रशिक्षण और आधुनिक उपकरणों के उपयोग के कारण त्वरित बचाव संभव हो सका। घने कोहरे के कारण दृश्यता बेहद कम थी, फिर भी तटरक्षक बल ने यह सुनिश्चित किया कि सभी तीर्थयात्रियों को बचा लिया जाए।

कार्यालय में लिखी जाने वाली सामान्य टिप्पणियाँ

क्रमांक	अंग्रेजी टिप्पणी	अनुवादित हिंदी टिप्पणी
	A	
01.	Above mentioned/above said	उपर्युक्त
02.	According to	के अनुसार
03.	Action has already been taken in the matter	इस मामलें की कार्यवाही पहलें ही की जा चुकी है
04.	Action may be taken accordingly	तद्नुसार कार्यवाही की जाए
05.	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
06.	Agenda is sent herewith	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है
07.	Applicable to	पर लागू है
08.	Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान किया जाए
09.	As directed	निर्देशानुसार
10.	As per instruction	अनुदेशानुसार
11.	As proposed	यथा प्रस्तावित
	B	
12.	Brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे दिए गए है
13.	Bring into notice	ध्यान में लाना
	C	
14.	Case has been closed	मामला समाप्त कर दिया गया
15.	Certificate by the competent authority is required	सक्षम प्राधिकारी का प्रमाणपत्र अपेक्षित है
16.	Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है
17.	Copy enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
18.	Copy forwarded for information/necessary action	सूचना/आवश्यक कार्यवाही के लिए
	D	
19.	Decision is awaited	निर्णय की प्रतीक्षा है
20.	Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
21.	Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारुप
22.	Duly sanctioned	विधिवत मंजूर किया हुआ

	E	
23.	Early action in the matter is requested	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्यवाही करें
24.	Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
25.	Extension of leave	छुट्टी बढ़ाना
	F	
26.	Facts of the case in brief are as follows	संक्षेप में मामलें के तथ्य इस प्रकार है
27.	For approval of commander	कमांडर के अनुमोदन के लिए
28.	For concurrence please	सहमति के लिए
29.	For consideration	विचारार्थ
30.	For necessary action	आवश्यक कार्यवाही के लिए
31.	For perusal	अवलोकनार्थ
32.	For signature of commander	कमांडर के हस्ताक्षर के लिए
33.	Funds are available within sanctioned budget	मंजूर बजट में निधि उपलब्ध है
	Forwarded for approval	अनुमोदन हेतु प्रस्तुत
	G	
34.	Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे
	I	
35.	If approved, a letter will be sent on the above line	यदि अनुमोदन करें तो उपर्युक्त सुझाव के अनुसार पत्र भेजा जाएगा
36.	In accordance with	के अनुसार
37.	In compliance with	का पालन करते हुए
38.	In exercise of	का प्रयोग करते हुए
39.	In respect of	के विषय में
40.	In view of	को ध्यान में रखते हुए
	J	
41.	Justification has been accepted	औचित्य स्वीकार कर लिया गया है
	K	
42.	Keeping in view	को ध्यान में रखते हुए
43.	Kindly review the case	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें
	L	
44.	Leave Recommended	अवकाश की सिफ़ारिश की जाती है
45.	Leave Approved	अवकाश अनुमोदित
46.	Leave submitted for approval please	अवकाश अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है

	M	
47.	Matter has been examined	मामलें की जाँच कर ली गई है
48.	Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
49.	May be approved	अनुमोदित किया जाए
50.	May be considered	विचार किया जाए
51.	May be permitted	अनुमति दी जाएं
52.	May be sanctioned	मंजूर किया जाए
53.	May be treated as urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए
54.	Mentioned above	उपर्युक्त
	N	
55.	Necessary steps should be taken	आवश्यक कार्यवाही की जा चुकी है
56.	No action necessary	कोई कार्यवाही आवश्यक नही है
	O	
57.	Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें
58.	Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
	P	
59.	Please discuss with file	फ़ाइल के साथ चर्चा कीजिए
60.	Please speak	बात कीजिए
61.	Put up on file	फ़ाइल में प्रस्तुत करें
	R	
62.	Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए
	S	
63.	Sanctioned as proposed	प्रस्ताव के अनुसार मंजूर
64.	Sanction hereby accorded to	इसके द्वारा मंजूरी दी जाती है
65.	Sanction of the competent authority may be obtained	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी ली जाए
66.	Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत
	U	
67.	Urgently required	तुरंत आवश्यकता है
	W	
68.	With immediate effect	इसी समय से
69.	Without delay	अविलंब
70.	With reference to	के संबंध में
	Y	
71.	You may take necessary action	आप तदनुसार आवश्यक कार्यवाही करें

फोटो गैलरी
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

ब्राह्मी लिपि की अन्य लिपियों से तुलना

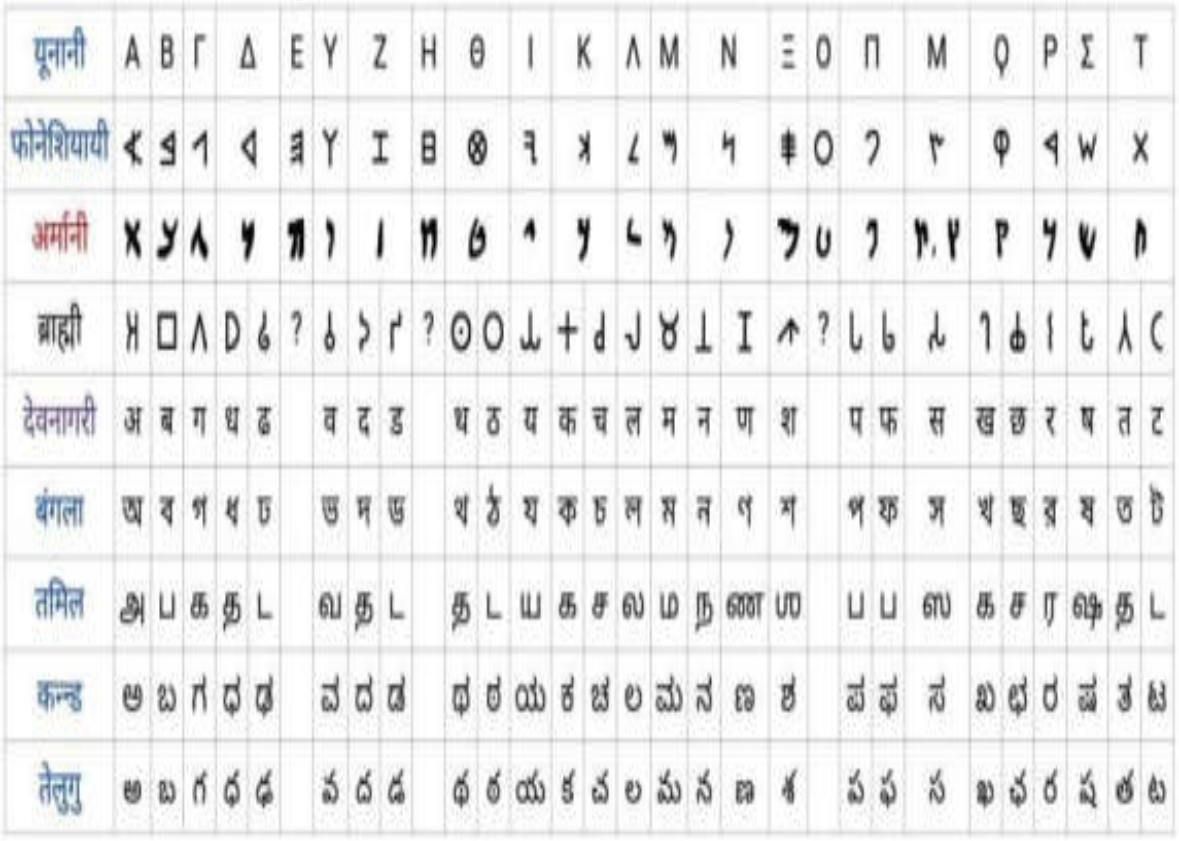

भारतीय तटरक्षक

यत्र तत्र सर्वत्र